थारू समाज एक परिचय (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 सुदर्शन कुमार

थारुओं को भारत की आदिम जाति का ही मिश्रित रूप मानना तर्कसंगत दीखता है, केवल मुसलमानी आक्रमण के बाद पश्चिम से पूरब आकर बसने वाले आर्यों को थारू कहना उनके अति प्राचीन इतिहास के साथ अन्याय करना है।

मूल रूप से भोजपुरी भाषी थारू है जो पश्चिमोत्तर बिहार में पश्चिमी चम्पारण और नेपाल सीमा से सटे तराई के इलाके में बसे हुए हैं, पश्चिमोत्तर बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिलान्तर्गत शिवालिक पर्वत श्रृंखला में भारत–नेपाल सीमा पर भिखनाठोरी से वाल्मीकिनगर तक करीब तीन हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में इस सर्वथा अनूठी जनजाति का निवास स्थल है, थारूओं के वर्गीकरण में आमतौर पर इन्हें भोजपुरी थारू कहा जाता है, वर्गीकरण का यह आधार मूल रूप से इनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, इस इलाके में इस पूरे क्षेत्र को 'थरुहट' के रूप में जाना जाता है, मेहनती, श्रमजीवी और जीवट के धनी थारुओं को न मुसीबतों और अभावों की परवाह, न संघर्षमय जिन्दगी का गम, न खुदगर्जी, न छल–कपट ईर्ष्या एवं द्वेष का इल्म है और न ही उन्हें नोचने–खसोटने का ज्ञान है, सही मायने में पहाड़ी मिट्टी और झरनों के स्वच्छ–निर्मल जल में पले ये गिरिजन धैर्य, सरलता, निरीहता, सहिष्णुता, भोलेपन तथा बहादुरी के बेमिसाल प्रतीक हैं।